मुल्तान [पाकिस्तान] दिगम्बर जैन मंदिर का इतिहास

पंजाब में जैन धर्म

- भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात जैन धर्म उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम की ओर फ़ैल गया।
- उस समय जैन मुनि बिना किसी बाधा के पंजाब प्रांत के क्षेत्र में विहार करते थे ।
- दक्षिण में भी अनेकों राजाओं ने जैन धर्म स्वीकार करके उसके प्रचार प्रसार में सहयोग दिया ।

INDIA
States and Union Territories
TAJIKISTAN
AFGHANISTAN
PAKISTAN
CHINA
NEPAL
BHUTAN
BANGLADESH
MYANMAR
SRI LANKA
JAMMU & KASHMIR
Srinagar
Jammu
HIMACHAL PRADESH
Dharamshala
Shimla
PUNJAB
Chandigarh
UTTARAKHAND
Dehradun
HARYANA
DELHI
New Delhi
RAJASTHAN
Jaipur
UTTAR PRADESH
Lucknow
BIHAR
Patna
SIKKIM
Gangtok
ARUNACHAL PRADESH
Itanagar
ASSAM
Dispur
NAGALAND
Kohima
MEGHALAYA
Shillong
MANIPUR
Imphal
TRIPURA
Agartala
MIZORAM
Aizawl
JHARKHAND
Ranchi
WEST BENGAL
Kolkata
ODISHA
Bhubaneswar
CHHATTISGARH
Naya Raipur
Nagpur
MADHYA PRADESH
Bhopal
GUJARAT
Gandhinagar
Diu
Daman
DAMAN & DIU
Silvassa
DADRA & NAGAR HAVELI
Mumbai
MAHARASHTRA
TELANGANA
Hyderabad
Amrawati
Panaji
GOA
ANDHRA PRADESH
KARNATAKA
Bengaluru
Chennai
Puducherry
PUDUCHERRY
TAMIL NADU
KERALA
Thiruvananthapuram
Kavaratti
LAKSHADWEEP
Port Blair
ANDAMAN & NICOBAR ISLANDS
State Capital
Country Capital
State Boundary
International Boundary

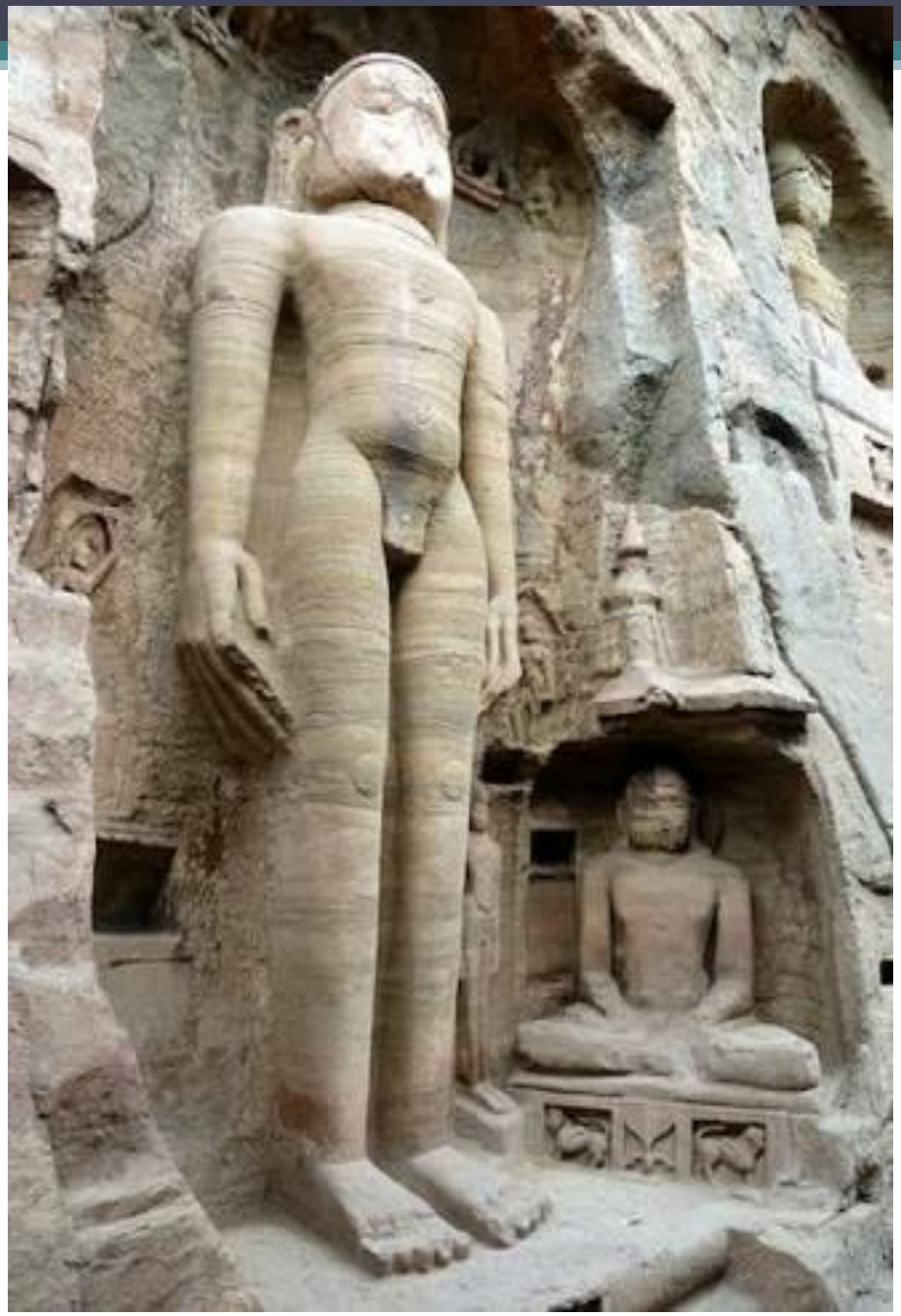

अफगानिस्तान में प्राप्त जैन मूर्ति

- महाराजा खारबेल , सम्राट चन्द्रगुप्त जैसे अनेकों शासक हुए जिन्होंने अपने शासन काल में जैन धर्म का विस्तार किया ।
- जैन धर्म मात्र भारत तक ही सीमित नहीं रहा अपितु भारत के बाहर भी इसका बहुत प्रचार हुआ , जिसका प्रमाण ऐतिहासिक तथ्यों से मिलता है ।

- श्रवणबेलगोला से मिले शिलालेखों के अनुसार, चंद्रगुप्त अपने अंतिम दिनों में जैन-मुनि हो गए।

- चन्द्र-गुप्त अंतिम मुकुट-धारी मुनि हुए, उनके बाद और कोई मुकुट-धारी (शासक) दिगंबर-मुनिनहीं हुए | अतः चन्द्र-गुप्त का जैन धर्म में महत्वपूर्ण स्थान है। स्वामी भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोल चले गए। वहीं उन्होंने उपवास द्वारा शरीर त्याग किया।

- श्रवणबेलगोल में जिस पहाड़ी पर वे रहते थे, उसका नाम चंद्रगिरि है और वहीं उनका बनवाया हुआ 'चंद्रगुप्तबस्ति' नामक मंदिर भी है।

INSCRIPTION OF THE INCOMING OF SHRUTHAKEVALI –
BHADRABAHUSWAMY & SAMRAT CHANDRAGUPTA.
श्रुतकेवलि भद्रबाहुस्वामी और सम्राट –
चन्द्रगुप्त के आगमन का शिलालेख ।
YAKSHI
DEVI

मौर्यकालिन साम्राज्य
इ.स.पू. २६५
पाटलीपुत्र
"हे मौर्यांचे आर्यावर्त!!"

विदेशों में जैन धर्म

- इसी तरह मिस्र , ईरान , लंका , नेपाल , भूटान ,तिब्बत , और वर्मा आदि देशो में भी जैन धर्म फैला हुआ था ।
- जो की समय समय पर प्राप्त मूर्तियों एवं अन्य सामग्रियों के माध्यम से पुष्ट होता रहता है ।

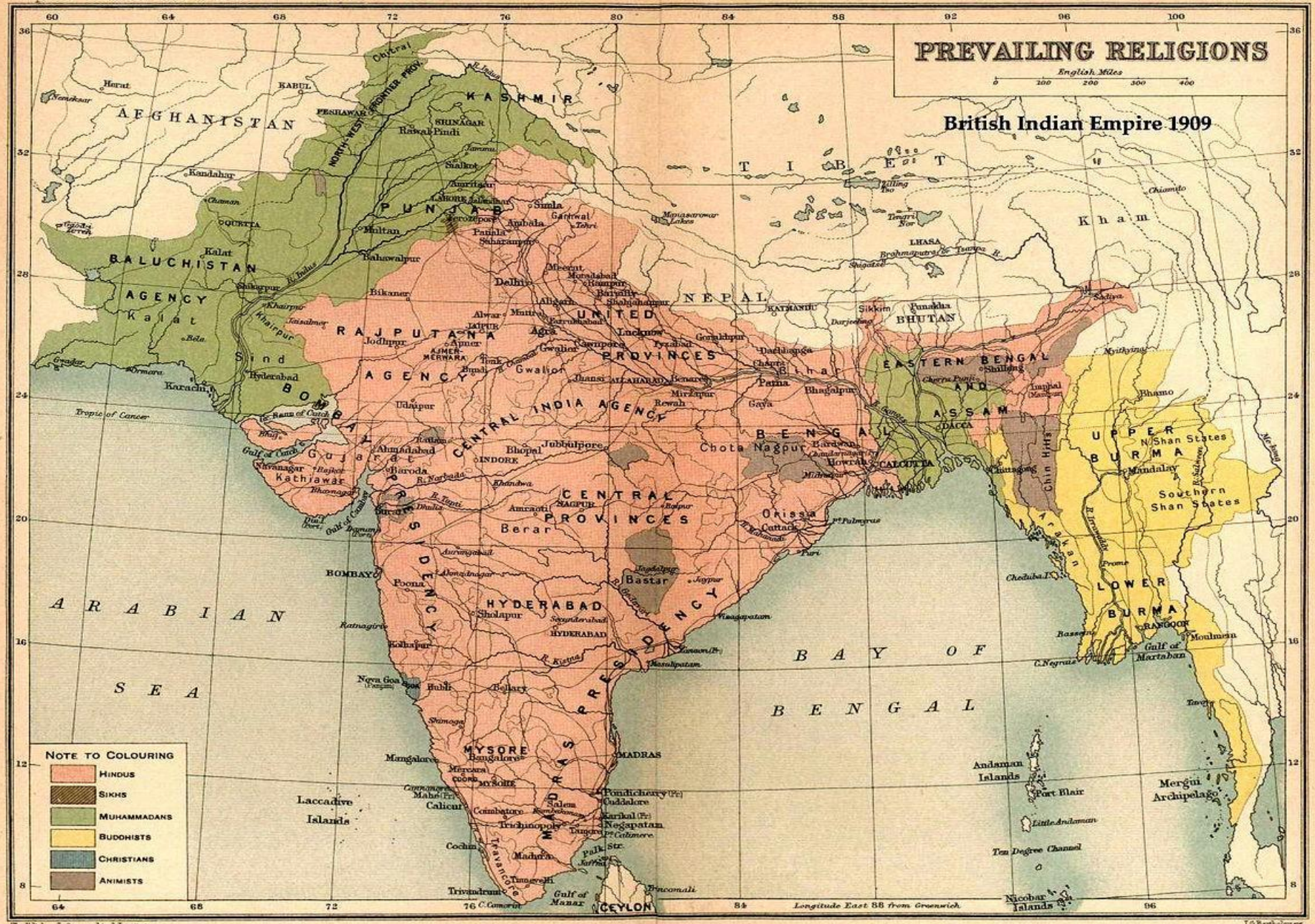

PREVAILING RELIGIONS
English Miles
British Indian Empire 1909
NOTE TO COLOURING
HINDUS
SIKHS
MUHAMMADANS
BUDDHISTS
CHRISTIANS
ANIMISTS
AFGHANISTAN
KASHMIR
TIBET
NEPAL
BHUTAN
PUNJAB
BALUCHISTAN AGENCY
RAJPUTANA AGENCY
UNITED PROVINCES
CENTRAL INDIA AGENCY
BOMBAY PRESIDENCY
CENTRAL PROVINCES
BENGAL
EASTERN BENGAL AND ASSAM
UPPER BURMA
LOWER BURMA
HYDERABAD
MYSORE
MADRAS PRESIDENCY
ARABIAN SEA
BAY OF BENGAL
CEYLON
Laccadive Islands
Andaman Islands
Nicobar Islands
Mergui Archipelago
Kham
Southern Shan States
N. Shan States
Tropic of Cancer
Longitude East 88 from Greenwich

Russia
Kazakhstan
Mongolia
Uzbekistan
Azerbijan
Georgia
Armenia
Turkey
Turkmenistan
Kyrgyzstan
Tajikistan
China
N. Korea
S. Korea
Japan
Lebanon
Syria
Israel
Iraq
Kuwait
Iran
Afghanistan
Pakistan
Bhutan
Pacific
Ocean
Jordan
Bahrain
Qatar
Saudi
Arabia
UAE
Nepal
India
Myanmar
Oman
Bangladesh
Laos
Vietnam
Philippines
Thailand
Cambodia
Yemen
Indian
Ocean
Brunei
Maldvies
Sri Lanka
Malaysia
Singapore
Indonesia

पंजाब भारतीय संस्कृति का प्रमुख केंद्र था

- वैदिक आर्यों के यहाँ आने के पूर्व यहाँ पर श्रमण संस्कृति प्रचलन में थी , जिसका प्रमुख केंद्र पंजाब था।

- इतिहासकारों का कहना कहना है की ऋग्वेद की रचना भी इसी प्रदेश में हुई थी ।

- इस तरह यहाँ पर श्रमण और वैदिक संस्कृति साथ साथ पल्लवित होती रहीं ।

- लेकिन अंग्रेजों के पूर्व जितने भी आक्रमणकारी आये उन्होंने सिंध और पंजाब की संस्कृति को सर्वाधिक नुकसान पहुँचाया , और इसे विकसित होने का अवसर नहीं दिया ।

- इसलिए आज भी जब कभी इस क्षेत्र की खुदाई की जाती है तो प्राचीनतम संस्कृति के नए नए तथ्य सामने आते हैं ।

पंजाब में जैन धर्म

- मोहनजोदड़ो और हडप्पा की खुदाई से भारतीय संस्कृति बहुत ही प्राचीनतम सिद्ध हो चुकी है।
- उस समय इस प्रदेश का नाम पंजाब नहीं था , अपितु अकबर के शासन काल में लाहौर , मुल्तान , सरहिंद और भटिंडा ये चार प्रान्त थे ।
- इस प्रदेश से सतलुज , व्यास , रवि , चिनव , और झेलम ये पांच नदियाँ निकलती हैं जिसके आधार पर पांच नदियों वाला प्रदेश यह पंजाब कहलाता है ।

- मोहनजोदड़ो से प्राप्त मिटटी की मुद्रओं पर एक तरफ बड़े आकर के भगवन ऋषभदेव की कायोत्सर्ग की मूर्ति बनी हुई है तथा दूसरी तरफ बैल का चिन्ह बना हुआ है।

- साथ ही साथ हडप्पा की खुदाई में भी कुछ खण्डित मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं ।
- जिससे यह बात प्रमाणिक होती है की जैन धर्म एक प्राचीनतम धर्म है।

Jain division of time (the sixth of an Avasarpin2i or Utsarpin2i)

Circle with six divisions same as indus symbol to the right.

मुल्तान और बनारसीदास जी

- मुल्तान नगर उत्तरी पंजाब में दिगम्बर जैन संस्कृति का प्रमुख केंद्र था जहाँ पर ओसवाल समाज प्रारंभ से ही दिगम्बर अनुयायी रहा है।
- बनारसीदास जी के नाटक समयसार का भी भरपूर प्रभाव इस क्षेत्र में था ।
- बनारसीदास जी के नाटक समयसर की लहर एक ओर आगरा से मुल्तान होती हुई डेरागाजिखान तक पहुंची तो दूसरी ओर आमेर , सांगानेर , कामा में अध्यात्म शैली को स्थापित करती गयी ।

मुल्तान एवं पंडित टोडरमल जी

- तेराहपंथ विचार धारा का केंद्र जब जयपुर बना और तत्त्वज्ञान की लहर जब टोडरमल की के माध्यम से प्रवाहित हो रही थी उस समय मुल्तान से बहुत से व्यापारी जयपुर आते जाते रहते थे।

- तब जब कुछ लोगों को कोई शंका होती थी ति वे मुल्तान से ही आपको पत्र लिखकर समाधान मांगते थे।

- एक चिट्ठी जो की आज भी सुरक्षित है व इस बात का प्रबल प्रमाण है।

- पंडित टोडरमल जी ने रहस्य पूर्ण चिट्ठी संवत १८११ माघ वदी 5 के दिन मुल्तान निवासी खानचंद जी, गंगाधर जी , सिद्दार्थदास जी , एवं एनी सधर्मी भाइयों के नाम लिखीं थी।

- जिसकी प्रतिलिपि मुल्तान दिगम्बर जैन मंदिर आदर्श नगर जयपुर में सुरक्षित है।

- यह टोडरमल जी द्वारा लिखी हुई सर्वप्रथम रचना है।

मुल्तान संवत १९०१ से २००० तक

- जिस प्रकार दीपक की लौं भुझने के पूर्व अधिक प्रकाश करती है , कुछ ऐसी ही स्थिति मुल्तान की थी।

- अध्यात्म की चर्चाओं में मुल्तान दिगम्बर जैन समाज अपने चर्म पर थी , अक्सर गोष्ठियां होना , बड़े बड़े महोत्सव होना , विधान इत्यादि का होना मुल्तान में होता रहता था।

- वहां पर समय समय पर बड्डे बड़े विद्वानों का आगमन भी होता रहता था।

विद्वानों के नाम

- पंडित पन्नालाल जी न्याय दिवाकर , कल्याणमल जी अलीगड़ ,
- पंडित कस्तूरचंद जी , प. मक्खनलाल जी मुरैना ,
- मक्खनलाल जी दिल्ली , कैलाशचंद जी वाराणसी
- प. राजेन्द्रकुमार जी मथुरासंघ ,
- प. लालबहाद्दुर शास्त्री इत्यादि

- मुल्तान पर मुसलमानों के निरंतर आक्रमण होते रहे जिसके करण कई बार मंडियों का विध्वंस एवं पुनर्निर्माण हुआ।

- कुछ जैनी किले में रहते थे लेकिन लडाई में मुल्तान दुर्ग ध्वस्त हुआ और हमारी बहुमूल्य सामग्री नष्ट हो गयी , जैन बंधुओं को भी किला छोड़कर बहार शहर में आकर रहना पड़ा।

- पश्चात खुदाई में उसमे से भगवन पार्श्वनाथ की पाषाण की भव्य मूर्ति निकली तथी , जिससे यह बात प्रमाणित होती है की 16 वी सदी में मुल्तान में जैनों का अस्तित्त्व था।

- उपर एक कमरे में भगवान चन्द्रप्रभ की सफेद पाषाण की मूर्ति थी जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है की रात में कई बार मूर्ति के सामने घंटे बजते तथा जयजयकार की आवाज सुना देती थी।

मुल्तान छावनी

- मुल्तान से 3 किलोमीटर दूर मुल्तान छावनी में एक प्राचीन भव्य दिगम्बर जैन मंदिर था !

- किन्तु इसके प्रारंभिक इतिहास के सम्बन्ध में कोई जानकारी प्राप्त नहीं है !

- सन १९३५ में इसका जीर्णोद्धार करवाया गया , जिसमे मुल्तान छावनी समाज के साथ साथ मुल्तान दिगम्बर जैन समाज भी थी !

- १९४७ में देश विभाजन के समय मुल्तान छावनी के भाइयों ने भारत आने का निर्णय किया , और मंदिर की मूर्तियों को मुल्तान मंदिर में विराजमान करके भारत आ गये !

- वे सभी मूर्तियाँ मुल्तान मंदिर की मूर्तियों के साथ साथ भारत लायीं गयीं , जो की वर्तमान में मुल्तान दिगम्बर जैन मन्दिर आदर्श नगर में विराजमान हैं !

मुल्तान और विभाजन एक संघर्ष

- 15 अगस्त १९४७ को जहाँ सारे भारत वर्ष में स्वतंत्रता प्राप्ति के उपलक्ष्य में समारोह आयोजित किये जा रहे थे , प्रत्येक भारतवासी स्वतंत्रता के स्वप्न देख रहा था , ऐसे में पाकिस्तान में जैन , हिन्दू और सिक्खों के लिए स्वतंत्रता एक अभिशाप बन गयी थी !

- उस समय पाकिस्तान में सांप्रदायिक उपद्रव हो गये , मार काट मचने लगी !

- रेल और बस यात्रा सुरक्षित न रही !
- ऐसे में मुल्तान और डेरागाजीखान के दिगम्बर जैन समाज के सामने एक अजीव संकट उपस्थित हो गया!
- एक ओर जीवन मृत्यु का संकट तो दूसरी ओर सैकड़ों वर्षों से पालन पोषण करने वाली जन्म भूमि का परित्याग !

- एक ओर माँ , बहनों की सुरक्षा का संकट तो दूसरी ओर जिन प्रतिमाओं और शास्त्रों को सुरक्षित रखने का प्रश्न !
- सम्प्रदायों में व्याप्त आग को देखकर प्रत्येक व्यक्ति का दिल दहल जाता था !
- और ऐसे में समाज के मन में एक प्रश्न – की आखिर कैसे जैन प्रतिमाओं को सुरक्षित रखा जाये !

समाज की MEETING

आखिर समाज की मीटिंग हुई और सबने यही तय किया कि शीघ्रातिशीघ्र उन्हे अपनी जन्मभूमि को छोडकर भारत मे चले जाना चाहिये इसी मे सबकी सुरक्षा है तथा धर्म की रक्षा है। तत्काल समाज के तीन चार महानुभाव देहली गये और किसी तरह वायूयान किराया पर ले चलने की पूरी कोशिश करने लगे। देहली मे उस समय सरकार एव किसी भी हवाई जहाज कम्पनी से व्यवस्था नही हो सकी। आखिर वे चारो महानुभाव हवाई जहाज से बम्बई गये और वहाँ पर वायुयान की एक प्राइवेट कम्पनी को 400/— रुपये प्रति व्यक्ति किराये के हिसाब से हवाई जहाज देने के लिये राजी कर लिया और बम्वई से मुलतान हवाई अड्डे पर पहुच गये।

समर्पण

उधर नगर मे समस्त दिगम्वर जैन परिवारो ने अपना थोडा वहुत सामान जो ले सकते थे उसे साथ मे ले लिया और हवाई अड्डे की ओर चल पडे। चलते समय अपने सुन्दर भवनो, पुश्तेनी जायदाद, सामान से भरी हुई दुकानों एव व्यापारिक प्रतिष्ठानो को छोडने से सभी की आँखो मे आसू आ गये क्योकि यह किसको पता था कि उन्हे अपनी प्राणों से भी प्यारी सम्पत्ति को इस प्रकार छोडना पडेगा। लेकिन छोडने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय शेष नही रहा था। उन्हे सतोष इसी वात का था कि वे अपने साथ अपना परा परिवार, भगवान की मूर्तियाँ एव शास्त्र भण्डार ले जा रहे है।

जिन शासन का प्रभाव

हवाई जहाज मे मूर्तियो एवं शास्त्रो की पेटियो को रखा गया तथा जब सवारियों के बैठने का नम्बर आया तो जहाज के चालक ने हवाई जहाज मे बोझ अधिक होने के कारण उडान भरने से मना कर दिया। सभी के चहरे उतर गये और भविष्य की चिन्ता सताने लगी। लेकिन समाज के मुखियाओ ने पाइलेट को समझाया कि इन पेटियो मे भगवान की मूर्तिया हैं, इनके प्रभाव स कोई भी सकट नही आ सकता है, पूर्ण विश्वास रखे। साथ ही यह भी कहा कि अगर मूर्तियाँ नही जावेंगी तो वे भी नही जावेंगे। धर्म के प्रति विश्वास एव दृढता देखकर पायलाट चौधरी ले चलने को तैयार हो गया। उस समय सभी स्त्री पुरुषो ने जहाज मे बैठते ही प्रतिज्ञा की कि जब तक जहाज सकुशल जोधपुर नही पहुचेगा तब तक उनका अन्न जल का त्याग है। कैसा होगा वह समय और कैसी होगी उनकी मन की स्थिति यह विचारणीय है।

आश्चर्य -

जव हवाई जहाज ने उडान भरी तब सभी ने णमोकार मंत्र का स्मरण किया। कुछ क्षणो मे वायुयान जोधपुर पहुंच गया। जैसे ही हवाई अड्डे पर हवाई जहाज उतरा हवाई जहाज से वाहर आते ही पायलट चौधरी ने भावविभोर होकर जिन प्रतिमाओ को नमस्कार किया और कहा कि इन्ही का चमत्कार है कि हवाई जहाज मे इतना अधिक भार होते हुए भी यह जहाज फूल के समान चलता रहा तथा सकुशल यहाँ पहुंच गया, अन्यथा जहाज मे इतना वजन लाना बिलकुल सम्भव नही था।

एक और घटना

यहाँ एक घटना और उल्लेखनीय है कि कुछ कारणवश तीन चार भाई मुलतान मे रह गये थे और भगवान पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा जो मुलतान किले से प्राप्त हुई थी, इसके मन्दिर की वेदी खाली न रहे इस अभिप्राय मूर्तियाँ लाते समय वहाँ विराजमान कर आये थे। वे लोग नित्य दर्शन पूजन आदि करते थे। कुछ दिन पश्चात् रात्रि को उनमे से एक भाई श्री भवरचन्दजी सिंघवी को स्वप्न आया कि वे लोग वहाँ से जल्दी चले जावे और मन्दिर मे जो मूर्ति विराजमान है उसके स्थान पर श्री श्रीदासूरामजी गोलेछा के घर के नीचे वाले कमरे के आले मे एक अप्रतिष्ठित मूर्ति रखी है उसे मन्दिर की वेदो मे रखकर भ० पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठित मूर्ति को साथ ले जावे।

श्री भवरचदजी सिंघवी

प्रात होते ही उन्होने दासूरामजी एव अन्य भाइयो को स्वप्न की वात कही, इस पर दासूरामजी ने कहा कि उन्हे तो मूर्ति के विषय मे कोई जानकारी नही है, चलो देख लेते हैं । जाकर कमरे को खोल कर देखा तो वास्तव मे उसी आले मे मूर्ति रखी हुई मिली, जिसे देखकर दासूरामजी आश्चर्यचकित हो गये । उन्होने कहा कि उनकी साठ वर्ष की अवस्था मे उन्होने न तो कभी इस मूर्ति को रखा और न कभी देखा ही, पता नही यह कव कैसे और कहाँ से यहाँ आई । उस मूर्ति को लाकर मन्दिरजी की वेदी मे रखा गया तथा भगवान

थ की प्रतिमा को जैसे ही मन्दिर से लेकर उस मुहल्ले से वाहर आ रहे थ

लमानो के झुँड ने इस मुहल्ले मे प्रवेश किया तथा देखते ही देखते सभी मकानो पर

कब्जा कर लिया । वे चारो ही व्यक्ति तत्काल मुलतान से चले आये और भगवान की

भी साथ ले आये ।

जीवन नहीं जिन शासन महत्त्वपूर्ण है ।

इस तरह मुलतान दिगम्बर जैन समाज़ की अपनी धार्मिक निष्ठा, सच्चरित्रता एवं तिमाओ तथा जिनवाणी को लाने के प्रयास के शुभ भाव से चल अचल सम्पत्ति के न के अतिरिक्त किसी भी परिवार के एक भी व्यक्ति को शारीरिक कष्ट एवं जीवन की नही हुई ।

जोधपुर स्टेशन के पास, दिगम्वर जैन मन्दिर मे मूर्तियो एवं शास्त्र भण्डार की को सुरक्षित रखवा दिया गया ।

श्री गुमानीचन्दजी, श्री बुद्धसेनजी सुपुत्र श्री छोगमलजी सिघवी मुलतानी जो स्तान बनने के कुछ समय पूर्व जोधपुर आकर रहने लगे थे उनके यहाँ समाज एक दिन के पश्चात् जयपुर के लिये रवाना हो गया ।

गाडी के जयपुर पहुंचते ही जैन समाज के कुछ लोग जो पहिले से ही स्टेशन पर हुए थे, मुलतानी जैन भाइयों का आदर सत्कार करते हुए शहर मे ले गये, तथा जहाँ ठहराने आदि की व्यवस्था की थी वहाँ उन्हे पहुचा दिया।

जयपुर में आवास मिलने मे विशेष कठिनाई नही हुई, किन्तु कहाँ मुलतान क सुविधायुक्त अपने मकान और कहाँ किराये के मिले जैसे तैसे मकान, लेकिन जीवन मे र चढाव सुख दुःख अच्छी बुरी परिस्थितियाँ आती है, उनमे अपने आपको समर्पित करदे विशेष आकुल न हो वही सच्चा मानव है। विपत्तियों से घबराकर अधीर होने वाले बहुत होते है लेकिन उनका दृढता पूर्वक सामना करने वाले विरले ही होते है। मुलतान जैन ाज ने तो ऐसी विकट एव कठिन परिस्थिति मे भी धैर्य एवं साहस को नही छोडा तथा भविष्य के निर्माण मे दृढतापूर्वक लग गये।

जोधपुर से जयपुर

कुछ दिनो पश्चात् जोधपुर से रेलगाडी के एक विशेष डिव्वे मे मूर्तियो एवं शास्त्र
ार की पेटियो को जयपुर ले आए तथा श्री शान्तीनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर तेरह
थयान, घी वालो का रास्ता, जौहरी बाजार मे बडे उत्साह एव उल्लास के साथ मूर्तियों को
वेदी मे विराजमान कर दिया गया तथा शास्त्र भण्डार को सुव्यवस्थित रूप से
ालमारियो मे रख दिया और मुलतान की तरह यहा भी सभी भाई बहिन दर्शन भक्ति एवं
ामूहिक पूजन बडे ठाठ बाट से करने लगे, इससे शीघ्र ही मुलतान समाज जयपुर जैन
ाज के लिये आकर्षण का केन्द्र वन गया।

बड़ा मंदिर , जयपुर

पाकिस्तान से आने के पश्चात् मुलतान से आए जैन वन्धु दो भागो मे विभक्त गये। उसमे लगभग साठ प्रतिशत तो जयपुर वस गये तथा चालीस प्रतिशत दिल्ली कर रहने लगे, इसका मुख्य कारण व्यवसाय की व्यवस्था है।

वर्तमान मुल्तान जैन मंदिर

- -अनुभव